'सब' सब के नसीब में नहीं होता है।

– अज्ञात

जटिलताएं पैदा हो गई...

सब कुछ बंद होने का अर्थ है मोबिलिटी पर रोक। लेकिन सोमवार को कई शहरों में जबर्दस्त मोबिलिटी देखी गई। संकट से घबराए लोग अपने-अपने मूल स्थानों की ओर लौटने लगे जिससे कई रेलवे स्टेशनों और बस स्टेशनों पर अफरातफरी मच गई।

मनोज तिवारी।

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए लगभग पूरे देश को ही लॉकडाउन की स्थिति में लाना पड़ गया है। इस महामारी से लड़ने का यही सबसे मुफीद तरीका है। लेकिन एक आम भारतीय के लिए यह एक अप्रत्याशित स्थिति है, इसलिए वह अपने को इन हालात के लिए तैयार नहीं कर पा रहा है। इससे कई तरह की जटिलताएं पैदा हो गई हैं। सब कुछ बंद होने का अर्थ है मोबिलिटी पर रोक। लेकिन सोमवार को कई शहरों में जबर्दस्त मोबिलिटी देखी गई।

संकट से घबराए लोग अपने-अपने मूल स्थानों की ओर लौटने लगे जिससे कई रेलवे स्टेशनों और बस स्टेशनों पर अफरातफरी मच गई। कहां तो सबको एक-दूसरे से दूर रहना था, और कहां वे जानवरों की तरह ठुंसे हुए यात्रा कर रहे थे और अपने लिए मुसीबतें मोल रहे थे। दरअसल देश भर में फैक्ट्रियां, दफ्तर, स्कूल-कॉलेज और कोचिंग इंस्टीट्यूट बंद होने के बाद उनके सामने स्वाभाविक रास्ता यही था कि वे अपने गांवों-कस्बों की ओर लौट जाएं। यह यथार्थ अक्सर हमारी समझ से परे चला जाता है कि भारत अभी आंतरिक विस्थापितों का देश है, जहां लोग रोजी-रोटी और शिक्षा के लिए अपना घर छोड़कर दूर के शहरों में जाते हैं। किसी भी संकट की स्थिति में उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया अपने मूल स्थान लौटने की होती है। इस बात को समझे बगैर कई फैसले किए गए। जैसे छात्रावास बंद कर दिए गए, जबकि जरूरत ऐसी व्यवस्था करने की थी कि स्टूडेंट्स को बाहर न जाना पड़े। इसी तरह कारखाने और कई

सेवाएं बंद कर दी गईं लेकिन यह नहीं सोचा गया कि कामगारों का क्या होगा। संभवतः यह फैसला बिना होमवर्क के किया गया। बहरहाल, इन फैसलों में कोई भी ऐसा नहीं है जिसे बदला न जा सके। किसी भी हाल में आवाजाही रोकने की जरूरत है। जो जहां है, उसे वहीं रोका जाए, जो तभी संभव है, जब लोगों के भरण-पोषण पर कोई आंच न आए। इसके लिए मजदूरों को आश्वस्त करना होगा कि बिना काम किए भी उनकी रोजी-रोटी चलती रहेगी। उन्हें राशन और अन्य जरूरी वस्तुएं उपलब्ध करानी होंगी। एक समस्या यह भी है कि रोजमर्रा की कई चीजों की कीमतें अचानक बढ़ गई हैं और कई वस्तुओं की किल्लत भी हो गई है। यह सप्लाई रुकने की वजह से हुआ है।

दालें, खाद्य तेल, आटा, आलू, प्याज आदि की कीमतों में तेजी आई है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने स्वीकार किया है कि खुदरा बाजार में आलू के दाम बढ़कर शनिवार, 21 मार्च को 30 रुपये और प्याज के 40 रुपये प्रति किलो हो गए थे, जबकि 17 मार्च को इनके भाव क्रमशरू 25 और 30 रुपये प्रति किलो थे। महानगरों के कई इलाकों में लोग पीने के पानी के लिए बोतलों पर आश्रित हैं। सोमवार को दिल्ली-एनसीआर के कुछ क्षेत्रों में पानी की बोतलों की किल्लत रही। लॉकडाउन काफी लंबा भी खिंच सकता है। इसका तमाशा न बनने लगे, इसके लिए प्रशासन को ऐसी तैयारी करनी पड़ेगी कि समाज के किसी भी हिस्से को किसी तरह की दिक्कत न हो।

राहत की बात

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

एकबारगी यह राहत की बात लगती है, लेकिन भागदौड़ से निकलकर घिरे हुए, स्थिर जीवन में प्रवेश करना कोई आसान काम नहीं है। एक खास अनुशासन में बंधा शरीर और मन स्थितियां बदलते ही परेशानियों से घिर जाता है। पता चलता है, घर के मुखिया के घर में रहने से औरों की दिनचर्या प्रभावित हो रही है। गृहिणी को बार-बार चाय बनानी पड़ रही है। मुखिया लंच का टाइम आगे बढ़ाता जा रहा है क्योंकि ऑफिस से कभी भी कॉल आ जाती है। हमेशा चहल-पहल में रहकर एकांत के लिए तरसते लोग एकांत मिलते ही मनहूस अकेलेपन से घिर जाते हैं। घर के लोगों से भी कितनी बात की जाए? पता चलता है, घर से काम करना लोहे के चने चबाने जैसा है, क्योंकि बच्चों के लिए तो आप छुट्टी पर हैं।

संपादकीय

अपना स्पेस तलाशें

कोरोना वायरस से बचने के लिए कई नौकरियों में वर्क फ्रॉम होम का तरीका निकाला गया है। यानी दफ्तर से किए जाने वाले काम घर से ही कर लिए जाएं। सॉफ्टवेयर कंपनियों के दायरे में यह सुविधा पहले से मौजूद रही है, लेकिन अभी इसको तमाम सरकारी विभागों और तरह-तरह के कामों में लगी निजी कंपनियों द्वारा भी अपनाया जा रहा है। इस तरह मानसिक श्रम से जुड़ी देश की बहुत बड़ी श्रमशक्ति का सामना पहली बार एक नए प्रकार की कार्य संस्कृति से हो रहा है। अभी तक एक व्यक्ति के लिए नौकरी करने का मतलब था, एक नियत समय पर तैयार होकर एकाध घंटे की यात्रा करके ऑफिस पहुंचना, वहां अपना निर्धारित काम करना और कुल आठ-दस घंटे बाद घर लौटना। लौटते हुए उसके जेहन में घर पर इंतजार करते बच्चों की तस्वीर कौंधती है। बाजार से वह जब-तब उनके लिए कोई ऐसी चीज ले जाता है, जिससे उन्हें खुशी मिले। पति की अनुपस्थिति में गृहिणी की भी एक निश्चित दिनचर्या होती है। घर के काम, खाना और थोड़ा आराम। फिर हफ्ते में एक या दो दिन की छुट्टी, घूमना-फिरना और पारिवारिक मनोरंजन से तरोताजा होकर अगले हफ्ते फिर वही क्रम। जिंदगी की यह बनी-बनाई लय अभी टूट गई सी लगती है। किसी को कहीं नहीं जाना। उठने की जल्दी नहीं, तैयारी की चिक-चिक नहीं, टिफिन बनाने का तनाव नहीं। लेटे-लेटे काम किया जा सकता है, अपनी मर्जी के मुताबिक कभी भी।

इलाकों में कोविड-19 का प्रकोप बहुत ज्यादा है, लिहाजा वहां से इनके आने के बाद भारत में बीमारी फैलने का खतरा काफी बढ़ गया है।

सबसे बड़ा लॉकडाउन

मंजू जोशी।

देश भर में 21 दिन का लॉकडाउन लागू कर दिया गया है। पूरी दुनिया में यह अब तक का सबसे बड़ा लॉकडाउन है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में इसकी घोषणा की। प्रधानमंत्री ने देशवासियों से कहा कि '21 दिन नहीं संभले तो आपका देश और आपका परिवार 21 साल पीछे चला जाएगा।' पिछले दिनों जिस तरह कई इलाकों में लोगों ने लॉकडाउन को लेकर लापरवाही दिखाई, उससे सरकार को इस बार सख्त रुख अपनाना पड़ा है। नियम तोड़ने वालों पर एक महीने से दो साल तक की सजा का प्रावधान कर दिया गया है। इस सख्ती की तात्कालिक वजह यह है कि पिछले दिनों 64 हजार के करीब भारतीय और विदेशी यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों से यहां आए हैं। इन इलाकों में कोविड-19 का प्रकोप बहुत ज्यादा है, लिहाजा वहां से इनके आने के बाद भारत में बीमारी फैलने का खतरा काफी बढ़ गया है।

इस लंबे लॉकडाउन का मकसद यह है कि बाहर से आए किसी व्यक्ति में अगर वायरस है भी तो वह इसे फैला न पाए। जिन मरीजों में लक्षण आने होंगे उनमें ये 14 दिन में दिख जाएंगे और उनका इलाज शुरू हो जाएगा। दूसरी

तरफ जो पहले से संक्रमित हैं उनका इलाज इस बीच पूरा हो जाएगा। लंबे लॉकडाउन से कई अप्रत्याशित चुनौतियां भी सामने आने वाली हैं। उनसे निपटने के लिए सरकार को दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देना होगा। जैसे अभी कई चिकित्सा कर्मियों ने शिकायत की है कि उनके मकान मालिक उनसे जबरन मकान खाली करा रहे हैं। इस पर गृह मंत्री ने दिल्ली के पुलिस कमिश्नर को निर्देश दिया है कि वे इन मकान मालिकों के खिलाफ कार्रवाई करें।

चिकित्सा से जुड़े सभी लोगों को अभी हर तरह की सुविधा प्रदान करनी होगी। यह भी देखना होगा कि उन्हें उच्च कोटि के मास्क और ग्लव्ज जैसे सुरक्षा संसाधनों की कमी न झेलनी पड़े, जिसकी शिकायतें अभी सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं। 21 दिनों के लॉकडाउन की घोषणा से लोगों में सबसे बड़ी चिंता आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता को लेकर है।

उपभोक्ता मामलों के मंत्री रामविलास पासवान ने कहा है कि जरूरी चीजों का मिलना सुनिश्चित करने के लिए सरकार हालात की निगरानी कर रही है। लोगों को रोजमर्रा की चीजों की किल्लत नहीं होनी चाहिए और इनकी कीमतें नियंत्रित रहनी चाहिए। कंस्ट्रक्शन सेक्टर में लगे मजदूरों के लिए श्रम मंत्री संतोष गंगवार ने राहत का ऐलान किया है। 52,000 करोड़ के लेबर सेस फंड से पैसा सीधे मजदूरों के अकाउंट में भेजा जाएगा। इसके अलावा विभिन्न श्रेणी के मजदूरों को एक माह का राशन मुफ्त दिया जाएगा।

लॉकडाउन लंबा है, इसलिए आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों और किसी मजबूरी के तहत कहीं आने-जाने वालों की आवाजाही सुनिश्चित करने को लेकर नियम स्पष्ट होने चाहिए। कोरोना के चक्कर में अन्य बीमारियों से ग्रस्त लोग अस्पताल न पहुंच पाएं, ऐसी नौबत भी नहीं आनी चाहिए। जाहिर है, लंबे लॉकडाउन में नियमों से ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह होगी कि प्रशासन कितने संवेदनशील तरीके से उनको लागू करता है।

अष्टयोग-4933

	2		6		7	3
2	26	4	40	7	38	4
	2		3	5	1	
	34	3	37	6	30	
	1		4		5	
3	33	2	24	1	27	6
	6		4		3	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4932 का हल

4	3	7	1	6	2	5
3	29	6	37	2	31	1
1	2	3	7	5	6	4
5	30	1	30	4	31	6
7	6	5	4	1	3	2
2	33	4	31	3	30	7
6	1	2	5	7	4	3

Jagrutidaur.com, Bangalor©

अपना ब्लॉग रचना में भी दिखे

मोहन। एक फेहरिस्त ऐसे किस्सों की भी है जिसमें लोगों ने लोगों की मदद की है। लेकिन मदद के दौरान मजदूरों को भी पूछा गया हो, ऐसे किस्से बॉलिवुड में नहीं सुनने को मिलते। एक्सट्राज और सहायक टेक्नीशंस के बारे में कभी कोई बात नहीं होती। आज जब फिल्म इंडस्ट्री में लोग अपनी नागरिकता को लेकर ज्यादा संवेदनशील हो रहे हैं, वायरस की वजह से पैदा हुई शट डाउन की स्थिति में सबसे कमजोर लोगों के हाथ थामने की पहल हुई है तो यह कोई छोटी बात नहीं है। हम जो करते हैं, उसका असर हमारी रचना, हमारे सृजन पर भी पड़ता है। उम्मीद करें कि आने वाला वक्त मुंबई फिल्म इंडस्ट्री के लिए और ज्यादा मानवीय होगा। चीन के वूहान शहर के एक अस्पताल में जब कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की जान बचाने में लगे डॉ फंग यिनह्वा की मौत हो गई तो 'कंटेजिएन' की उसी युवा डॉक्टर की याद आ गई। डॉक्टर्स की सोशल मीडिया प्रोफाइल पर जाइए तो आपको उनकी तस्वीर के साथ एक टैग लाइन मिलेगी, 'आइ कैन नॉट स्टे होम, आइ एम अ हेल्थकेयर वर्कर।'